दादा भगवान परिवार का

अक्टूबर २०१९

शुल्क प्रति नकल :₹ २०/-

अक्रम एक्सप्रेस

जगत् कल्याण

संपादकीय

बालमित्रों,

मारे जगत् कल्याण करवुं छे...
एक काम दादा नुं करवुं छे....

यह पद हम कितनी बार उल्लासपूर्वक गाते हैं और जगत् कल्याण की भावना करते हैं। परम पूज्य दादाश्री कितने ही जन्मों से यही एक भावना करते आए हैं कि "जगत् का कल्याण हो" उन्होंने इस जन्म में भी, इसी एक ध्येय के लिए जीवन जीया था। हम सभी भाग्यशाली हैं बचपन से ही हमें भी दादा की इस भावना का साथ देने का चान्स मिला। हम सभी तो दादा की बाल सेना हैं और सभी साथ मिलकर दादा के इस मिशन को ज़रूर आगे बढ़ाएँगे। ठीक है न?

तो आइए, इस अंक में हम जगत् कल्याण की भावना के बारे में जानें, जिससे यदि कभी दादा के काम से बोरियत हो जाए या पीछे हटने का मन हो जाए तो ऐसी समझ, ऐसी भावना का महत्त्व हमें ऐसा करने से रोक सके।

– डिम्पल मेहता

अक्रम एक्सप्रेस

Editor : Dimple Mehta

Printer & Published by

Dimple Mehta on behalf of
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Owned by
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist - Gandhinagar.

Printed at
Amba Offset
B-99, GIDC, Sector-25,
Gandhinagar - 382025.

Published at
Mahavideh Foundation
Simandhar City, Adalaj - 382421,
Ta & Dist-Gandhinagar.

© 2019, Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved

वर्ष : ७ अंक : ७
अखंड क्रमांक : ८०
अक्टूबर - २०१९

संपर्क सूत्र
बालविज्ञान विभाग
त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद - कलोल हाइवे,
मु.पो. - अडालज,
जिला . गांधीनगर - ३८२४२१, गुजरात
फोन : (०७९) ३९८३०१००
email:akramexpress@dadabhagwan.org
Website: kids.dadabhagwan.org

वार्षिक सदस्यता(हिन्दी)
भारत :२०० रुपए
यू.एस.ए. :१५ डॉलर
यू.के. :१२ पाउन्ड
पाँच वर्ष
भारत : ८०० रुपए
यू.एस.ए. : ६० डॉलर
यू.के : ५० पाउन्ड
D.D/M.O 'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम पर भेजें।

दादाजी कहते हैं...

जगत् कल्याण की भावना का फल क्या?

- दादा के जगत् कल्याण के प्रोजेक्ट में सेवा का एन्ड रिज़ल्ट, लोगों को सुख शांति होगी। औरों को कुछ भी सुख देंगे न, तो आपको उससे सुख और शांति मिलेगी ही।
- तीर्थंकरों ने भी जगत् कल्याण की भावना ही की थी बस। जो भी खाना मिले, जैसे भी सोने के लिए मिले, फिर भी निरंतर भावना क्या होती है? किसी भी तरह से जगत् का कल्याण हो।

जगत् कल्याण

- खुद के आत्मा का ज्ञान प्राप्त करना उसे आत्मकल्याण कहते हैं।
- जगत् कल्याण अर्थात् लोगों को आत्मा की ओर मोड़ना।

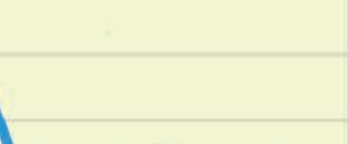

समाज कल्याण

किसी को मदद करे, उसे समाज कल्याण कहते हैं।

मीठी यादें

सन् १९९० में जब नीरू माँ टेम्पो ट्रेवल में मुंबई से गुजरात जाने निकलते तब बोरिवली में एक खास जगह पर खड़े रहते। उस जगह पर भगवान का मंदिर बने ऐसी उनकी भावना थी। वे कहते कि ऊँचे पहाड़ हो, बाजू में नदी बह रही हो, वहाँ पद्मावती माता का वास होता है। वहाँ यदि भगवान का मंदिर बने तो बहुत कल्याण होगा।

अब ऐसे समय में, मुंबई जैसी जगह पर मंदिर बनाने का विचार भी कई महात्माओं को नामुमकिन जैसा लगता था, वैसे समय में नीरू माँ ने उस जगह मंदिर बने ऐसी प्रबल भावना की। वे कहते "दादा भगवान भी जब इस रास्तें से गुज़रते तब इसी जगह पर खड़े रहकर खूब विधियाँ करते।" कहते हैं न कि ज्ञानी जहाँ विचरते हैं वहाँ तीर्थस्थान बन जाता है और आज ऐसा ही हुआ है।

पंद्रह साल बाद, सन् २००५ में अमरीका में एक महात्मा बहन नीरू माँ से मिले। वे बहन मुंबई में रहते थे। नीरू माँ का सान्निध्य मिले इस हेतु से अमरीका गए थे। बाद में उन्होंने बताया कि मुंबई बोरिवली में उनकी ज़मीन पर मंदिर का निर्माण हो सके ऐसा है। इन्डिया लौटने के बाद, नीरू माँ महात्माओं के साथ उनकी ज़मीन देखने गए। महात्माओं ने दो जगह दिखाई। संयोग से वह जगह वही थीं, जहाँ सालों से पहले नीरू माँ ने मंदिर बने ऐसी भावना की थी। नीरू माँ को वह जगह इतनी पसंद आ गई कि उन्होंने वहाँ बैठकर खूब सुंदर विधि की। नीरू माँ ने अपने अंतिम दिनों में भी इस मंदिर के लिए खूब विधियाँ एवं प्रार्थना की थी।

नीरू माँ के देहविलय के बाद उस जगह पर मंदिर के निर्माण कार्य में कई कठिनाइयाँ आई। लेकिन आज दादा, नीरू माँ और पूज्यश्री के आशीर्वाद से देव-देवियों के सहायता से और महात्माओं के पॉज़िटिव प्रयत्नों से नीरू माँ ने की हुई भावना साकार हो रही है।

नवम्बर ७ से १२ मुंबई (बोरिवली) में परम पूज्य दादा भगवान के जन्म जयंती के महोत्सव के साथ त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव भी मनाया जाएगा। साथ ही खुशी से भरपूर ऐसी अद्भुत बाल दुनिया की रचना भी वहाँ कि जा रही है। चलो! तो नीरू माँ की भावना को साकार होते हुए देखने के लिए! तो मिलते हैं, मुंबई में।

नवम्बर ७ से १२ मुंबई (बोरिवली) में परम पूज्य दादा भगवान के जन्म जयंती के महोत्सव के साथ त्रिमंदिर का भव्य प्राणप्रतिष्ठा महोत्सव भी मनाया जाएगा। साथ ही खुशी से भरपूर ऐसी अद्भुत बाल दुनिया की रचना भी वहाँ कि जा रही है। चलो! तो नीरू माँ की भावना को साकार होते हुए देखने के लिए! तो मिलते हैं, मुंबई में।

जादुई मंत्र

“काकी, काकी... किशन किशन घर पर है क्या? पशा काका नदी में नहाने गए थे और किशन उनके कपड़े लेकर भाग गया था। काका लकड़ी लेकर उसे ढूँढ रहे हैं। आज तो वह नहीं छूट पाएगा,” किशन के घर आकर शंभू ने ज़ोर से घोषणा की।

“अरे जा जा शंभूडा अपना काम कर,” किशन ने बाहर आकर अकड़कर कहा, “काका, तो क्या, काका के बापा भी मुझे नहीं पकड़ सकते।”

किशन का वाक्य पूरा भी नहीं हुआ था, इतने में तो उसके बापु जी घर के आँगन में आए। शंभू तो भाग गया लेकिन बापु जी का लाल-पीला चेहरा देखकर, किशन की धड़कने बढ़ गईं। बापु जी किशन को डाँट लगाएँ उससे पहले तो पशा काका वहाँ आ गए।

“माफ करना पशा भाई,” बापू जी ने पशा काका से हाथ जोड़कर कहा, “इस लड़के के तूफान से तो मैं परेशान हो गया हूँ। मैं इसे सज़ा दे देकर थक गया हूँ लेकिन वह तूफान करके अभी भी नहीं थका है। आज तो आप ही उसे सज़ा दीजिए।”

पशा काका ने लकड़ी पछाड़ी और किशन को धबराहट हो गई। "तो लड़के तेरी सज़ा यह है कि...."

किशन ने पशा काका की आँखों में देखा और तुरंत ही नीचे नज़र कर ली।

"तेरी सज़ा यह है कि आज शाम को तुझे संत श्री का प्रवचन सुनने के लिए मंदिर आना पड़ेगा। और हाँ, खबरदार यदि पीछे बैठा तो। मेरी नज़र तुझ पर रहेगी। ऐसा कहकर पशा काका वहाँ से चले गए।

किशन को "शांति" हो गई। इतनी आसान सज़ा तो पहले उसे कभी नहीं मिली थी। प्रवचन में वह आगे की लाइन में जाकर बैठ गया।

संतश्री ने एक कथा से प्रवचन शुरू किया।

"एक गाँव में निरंजनदास नामक एक सरल भक्त रहता था। एक दिन एक भूखा-प्यासा मुसाफिर निरंजन की झोंपड़ी में आ गया। निरंजन ने बड़े दिल से मुसाफिर को भोजन करवाया। निरंजन के सत्कार के प्रसन्न होकर, मुसाफिर ने निरंजन को एक जादुई मंत्र दिया और कहा," यह मंत्र बोलने से आपका ज़बरदस्त कल्याण हो जाएगा। लेकिन एक बात का खास ध्यान रखना। यह मंत्र सिर्फ आपके लिए ही है। यदि यह मंत्र आपने किसी और को बताया तो उसका कल्याण तो हो जाएगा, लेकिन आपको नरक में जाना पड़ेगा। यह सुनकर निरंजन तुरंत ही गाँव के चौक में दौड़कर गया। मुसाफिर निरंजन के पीछे, पीछे दौड़ा। निरंजन ने वहाँ उपस्थित सभी गाँववासियों को ज़ोर से वह मंत्र सुना दिया।

मुसाफिर को आश्चर्य हुआ। उसने निरंजन से पूछा, "भाई ऐसा क्यों किया?"

निरंजन ने बहुत ही सरलता से जवाब दिया, "यदि हज़ारों का कल्याण होता हो तो मुझे तो सौ बार नरक में जाना मंजूर है।"

संत श्री बोले, "बस, निरंजन को निरंतर यही भावना रहती कि किसी भी तरह लोग सुखी हों और उनके दुःख मिटें। और नियम ऐसा है कि जो अन्य के कल्याण के लिए जीवन जीता है, उसे कभी कोई दुःख स्पर्श नहीं कर सकता। लोगों के सुख के लिए जीओगे तो आपको कभी कोई दुःख नहीं आएगा। लोगों के कल्याण की सिर्फ भावना ही करोगे, फिर भी आपमें सुख उत्पन्न होगा।"

"महाराज, आप इतने खुश खुशाल किस तरह रहते हो? क्या आपके पास भी कोई जादुई

मंत्र है?"

युवक की ऐसी अवलोकन शक्ति देखकर संत प्रसन्न हो गए। "इस प्रश्न का जवाब मैं तुझे ज़रूर दूँगा, कहकर संत मौन हो गए।

इस वार्तालाप को एक महीना हो गया। अचानक एक दिन संत श्री किशन के घर आ गए।

किशन को नींद में से जगाया और कहा, "अरे, तू अभी भी सो रहा है? तेरे पूछे हुए प्रश्न का जवाब मुझे मिल गया है। वह बताने आया हूँ।"

किशन बिस्तर पर बैठ गया। उसने अँगड़ाई लेते हुए कहा, "बोलिए महाराज।"

"आज शुक्रवार है। अगले शुक्रवार को तेरी मृत्यु हो जाएगी," कहकर संत वहाँ से चले गए।

किशन के तो होंश ही उड़ गए। "हें... लेकिन महाराज सुनिए तो... मैं तो अभी जवान हूँ।" किशन महाराज के पीछे दौड़ा। लेकिन संत ने तो पीछे मुड़कर भी नहीं देखा। थोड़ी देर के लिए तो किशन को कुछ भी नहीं सूझा। "यह जो भी हो वह। यदि संत की बात सही निकली तो?" किशन को एक ज़बरदस्त भय ने घेर लिया।

उस दिन किशन बिल्कुल ही सुनमुन होकर बैठा रहा। तूफान करने की रुचि ही जैसे उड़ गई। रात को नींद भी नहीं आ रही थी। अचानक उसे संत के प्रवचन में कहे हुए शब्द याद आए। उसे मन में हुआ, "अब थोड़ा ही जीना है तो फिर अच्छे काम क्यों न करूँ।" और किशन के दिल में, सात दिन के लिए लोगों के सुख के लिए जीने का उद्देश्य बंध गया। कुछ भी किए बिना, उद्देश्य दृढ़ता से ही, उसकी निराशा ग़ायब हो गई और एक ग़ज़ब की स्फूर्ति अनुभव में आई।

दूसरे दिन से उसने लोगों का काम करना शुरू कर दिया। किसी को वैध के पास ले गया तो किसी के लिए सब्ज़ी ले आया। कभी बुज़ुर्गों की दिल से बातें सुनी तो कभी उन्हें मंदिर ले गया। स्कूल में शिक्षक की मदद की और घर पर माता-पिता का काम किया। किशन में आए हुए परिवर्तन को देखकर, माता-पिता को बहुत आश्चर्य हुआ। लेकिन कारण समझ में नहीं आया।

सुबह का समय था। किशन घर के आँगन में पक्षियों को दाना डाल रहा था। तभी रसोई से माँ की आवाज़ आई, "किशन बेटा, इस शुक्रवार का प्रसाद रमा काकी के यहाँ देकर आ तो।"

"शुक्रवार" सुनकर किशन के दिल की धड़कनें बढ़ गईं। आश्चर्य की बात यह थी कि लोगों मदद करने में किशन इतना खुश रहता था कि शुक्रवार आ गया, उसे इसका पता

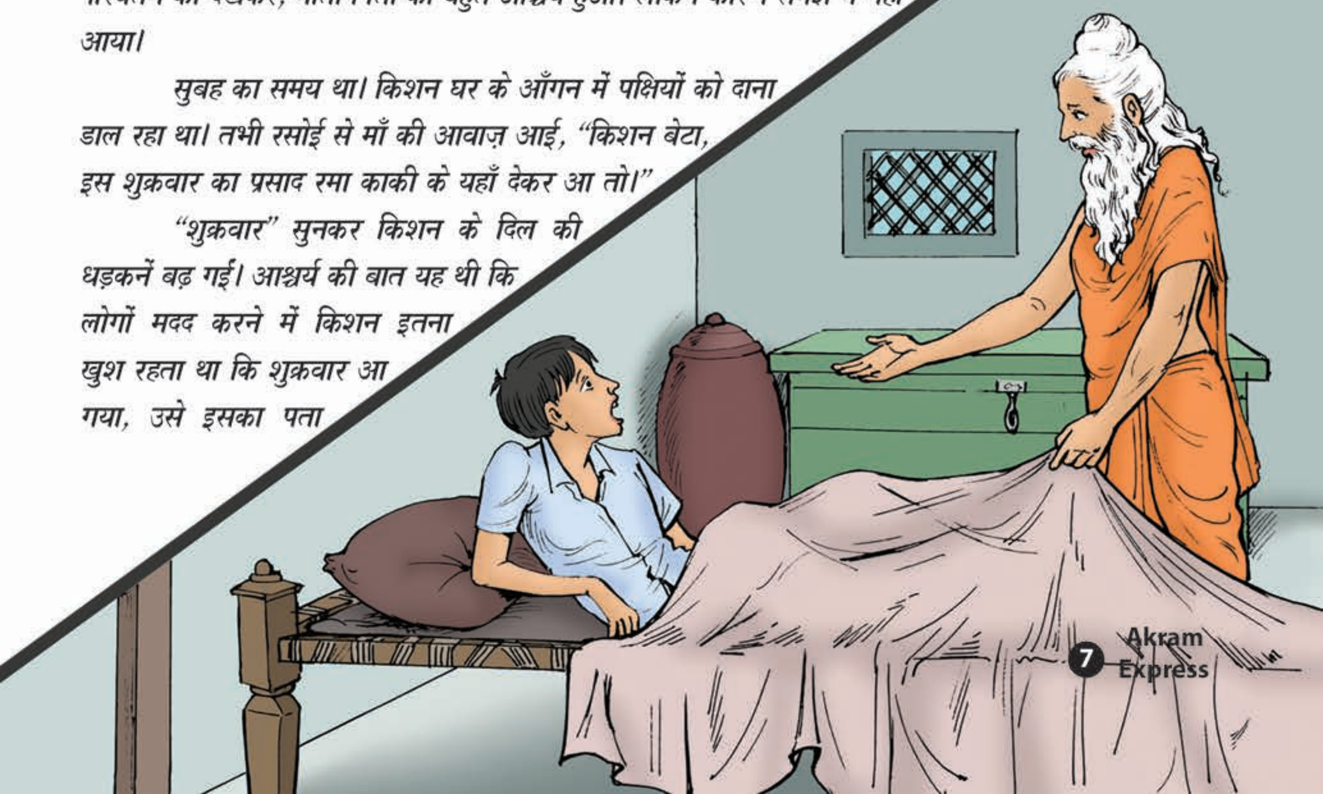

भी नहीं चला। लेकिन अब वह भयभीत हो गया। रमा काकी को प्रसाद देकर वह मंदिर की ओर दौड़ा।

मंदिर के दरवाज़े पर ही उसे संत मिल गए। घबराई हुई आवाज़ से, दोनों हाथ जोड़कर वह बोला, "आज शुक्रवार हो गया।" आगे कुछ भी पूछने की हिंमत नहीं हुई।

"घबराना मत, बेटा। तुझे कुछ नहीं होने वाला," संत ने किशन को आश्वासन दिया। संत के चेहरे पर हमेशा की तरह प्रसन्नता थी।

"तो आपने कहा था न कि शुक्रवार..." फिर किशन से आगे कुछ बोला नहीं गया।

संत बोले, "वह तो तेरे सवाल के जवाब को देने के लिए कहा था।" किशन को कुछ भी समझ में नहीं आया।

संत ने पूछा, "तू यह बता कि तेरा यह हफ्ता कैसा बीता?"

पिछले कुछ दिन याद करके, किशन की आँखों में चमक आ गई। वह बोला, "महाराज, बहुत आनंद से बीता। मैं पहले दिन तो बहुत दुःखी था। लेकिन उस रात मैंने लोगों को सुख देने की भावना की। और बस, उसी क्षण से मैं अपना दुःख भूल गया। आपने सही कहा था, लोगों की मदद करने में अनोखी खुशी है।"

संत ने बहुत ही प्रेम से किशन के सिर पर हाथ रखकर कहा, "बस, यही तुम्हारे सवाल का जवाब है। तुमने मुझसे खुशखुशाल रहने का कराण पूछा था न। जो कुछ भी तुमने इस हफ्ते किया, वह मैं हमेशा करता हूँ। और इसीलिए मेरा जीवन इतना सुखमय है। लोगों को सुख देने की भावना - वही मेरा जादुई मंत्र है।"

किशन ने संत के चरणों में सिर झुकाया और लोगों के कल्याण के लिए जीने की दृढ़ भावना की।

चलो खेलें...

नीचे दिए गए पैराशूट में, इस ईश्यू की कहानियों में जो भी शब्द इस्तेमाल किए गए हैं वे रखे हैं। डोरी से जुड़े हुए पैराशूट के शब्द एकसमान ही है। तो चलो, उन शब्दों को ढूँढ़ते हैं....

ज्ञानी पुरुष तो कमरे में बैठे-बैठे पूरे जगत् में घूमते हैं और जगत् का कल्याण करते हैं। ऐसा तो कोई नहीं कर सकता।

यह नई ही

"हे भगवान! मुझे सुख मिले।" - प्रार्थना बेकार जाती है।

"हे भगवान! घर के सभी लोगों को सुख-शांति मिले।"

"हे भगवान! पूरा जगत् का कल्याण हो।" - वह सही में सुखी होता है।

भावना से भी कल्याण हो ऐसा है। भावना कौन कर सकता है? जिसे कुछ चाहिए ही नहीं।

तो बात है !

रोज़ सुबह नहाकर भगवान की पूजा करके बोलना कि, "मुझे और जगत् को सद्बुद्धि दीजिए, जगत् कल्याण कीजिए।" यदि इतना बोलेंगे तो हमें संस्कार मिले ऐसा कहा जाएगा।

दीपक

भीषण गरमी में सारे दिन मेहनत करने के बाद, नंदा ने एक सिक्के की कमाई की।
कई दिन बाद एक रोटी नसीब होगी।
तभी राजमहल के बाहर डंका बजा।
राजा जी की खास सूचना के सिवाय यह डंका तो कभी नहीं बजता।
सभी राज्य निवासी राजमहल के बाहर इकट्ठए हो गए। नंदा भी वहाँ पहुँच गई।
सुनिए, सुनिए। महाराज का संदेश है कि आज रात हवेली के मंदिर में महर्षि पधारने वाले हैं। प्रजा को वहाँ उपस्थित रहने का निमंत्रण है।
और खास बताना है कि एक दीपक लेकर आना। महर्षि की हाज़िरी में दीपक प्रकटाकर आपकी मनोकामना पूरी करना।
प्रजा में उमंग उत्साह फैल गया।
इस एक सिक्के की कमाई शायद दीपक प्रकटाने के लिए ही हुई है।
पेट की भूख भूलकर नंदा एक सिक्के का तेल खरीदने के लिए दौड़ी। घर से मिट्टी का दिया लाकर, उसने खुशी-खुशी मंदिर के चौक में दीपक प्रकटाया।

अतिसुंदर वस्त्रों में सज्ज राज्य निवासियों ने, सजे हुए दियों में दीपक प्रकटाए। महर्षि की हाज़िरी में, जलते दीपकों से मंदिर का चौक जगमगा उठा।
राजा जी की पवित्र भावना ही हमें यहाँ खींच लाई है। आप सभी की मनोकामनाएँ ज़रूर पूरी होंगी।
महर्षि के आशीर्वाद सुनकर सभी घर जाने के लिए रवाना हो गए।
रात हो गई। अचानक बिजली की गड़गड़ाहट के साथ मूसलाधार बरसात बरसने लगी। नंदा के पेट भी कडाके बोल रहे थे। लेकिन उसका मन शांत और प्रफुल्लित था।
दूसरे दिन,
सुबह मुझे पुजारी जी मिले। उन्होंने बताया कि मंदिर के चौक में एक ग़ज़ब का चमत्कार हुआ है।
क्या चमत्कार?
मूसलधार बरसात में एक दीपक नहीं भुजा।

ज़रुर राजा जी का प्रकटाया हुआ दीपक होगा। चलिए, चलिए देखने जाते हैं।
धीरे-धीरे चमत्कार की चर्चा पूरे राज्य में फैल गई। चमत्कार को देखने के लिए मंदिर में भीड़ लग गई।
चमत्कार की बात राजा जी तक पहुँच गई। महर्षि को बुलाकर राजा जी मंदिर पहुँचे। देखा तो एक मिट्टी के दिए में प्रकटाया हुआ दीपक प्रज्जवलित था।
यह किस तरह संभव है प्रभु?
दीपक प्रकटाते समय उसने इतनी प्रबल भावना की होगी कि बरसात तो क्या सात समंदर का जल भी इस दीपक को नहीं बुझा सकता।
राजा और प्रजा को ज़बरदस्त आश्चर्य हुआ।
ऐसी तो क्या भावना होगी, प्रभु? और किसने यह भावना की?

नंदा देवी की प्रबल भावना का यह प्रतीक है। आप सभी ने दीपक प्रकटाते समय अपने और अपने परिवार के लिए सुख, संपत्ति और स्वास्थ्य आदि की माँग की।
लेकिन नंदा ने जगत् के लोगों के दुःख मिटें और सभी सुख शांति को प्राप्त करें, मुक्ति के पंथ को प्राप्त करें, ऐसी तीव्र भावना की।
ऐसी उत्कृष्ट भावना के लिए राजा और प्रजा ने मनोमन वंदन किया।
राजमहल की रसोई में से तरह-तरह के व्यंजन मंगवाकर राजा नंदा की झोंपड़ी में गए।
अरे राजा जी आप इस गरीब की झोंपड़ी में?
जिसके हृदय में सिर्फ अन्य के कल्याण की भावना हो और जिसे खुद के लिए कुछ नहीं चाहिए, उससे ज्यादा श्रीमंत इस दुनिया में कौन हो सकता है!
राजा का मस्तक नंदा की श्रीमंताई के सामने झुक गया।

जीवंत उदाहरण

पढ़ाई खत्म करने के बाद, शुरुआत में गाँधीजी वकील के तौर पर असफल रहे थे। लेकिन बाद में उन्होंने एक सफल वकील के तौर पर सिद्धि पाई। उनको कॉर्ट में व्यर्थ दलीलों से मिले नफे में कोई रुचि नहीं थी। वे दोनों पक्ष का हित ही चाहते थे, इसलिए हो सके वहाँ तक वे कॉर्ट के बाहर ही दोनों पक्षों का संतोषपूर्वक समाधान करवाते।

यों गाँधीजी वकीलात को भी एक सेवा के तौर पर लेने लगे। वे नफे की परवाह किए बगैर काम करते। उस समय सालाना आमदनी लगभग बीस से तीस हज़ार डॉलर थी। वे सुख-सुविधा वाला जीवन जीते थे।

जब सफल वकालत और एशो-आराम वाला जीवन सेवा के लिए अड़चन बना, तब गाँधीजी को वह सब छोड़ने में भी देर नहीं लगी। खुद के लिए जीना या दूसरों के सुख के लिए? वे जीवन के हर एक पड़ाव में यह चेक करते और हमेशा दूसरों के सुख के लिए जीना पसंद करते। दूसरों के सुख के लिए खुद का सुख खो देना, मुश्किल था। लेकिन उन्हें ऐसा करने से जो मुक्तता और आनंद का अनुभव होता था, उसका वर्णन हो सके ऐसा नहीं था।

उन्होंने नर्सिंग के फिल्ड में सेवा शुरू की। साथ ही "इन्डियन ऑपिनियन" नामक विकली मैगेज़ीन शुरू की। जब १८९९ में साउथ आफ्रिका में युद्ध हुआ, तब उन्होंने वहाँ बसे हुए लोकल भारतीयों की मदद से एम्ब्युलन्स सर्विस शुरू की।

इस तरह महात्मा गाँधीजी की आफ्रिका में शुरू हुई यह अदभुत यात्रा भारत वापस आने के बाद, उनके अंतिम साँस तक चली।

Magical answers

सितम्बर - २०१९ महीने की अक्रम एक्सप्रेस की कहानी "टेन्गो और पींगो" में हमने आपको ओपी की जादुई आइडिया ढूँढ़कर भेजने के लिए कहा था। आप लोगों ने रिस्पोन्स दिया हमें बहुत खुशी हुई। और इसीलिए, आपके नाम अक्टूबर - २०१९ के अंत में कहानी के केरेक्टर्स् के लिए उपयोग किया गया है। तो फिर नवम्बर - २०१९ के अंक की राह देखो और इस महीने के अंक को एन्जोय कीजिए।

OPI'S MAGIC TRICK
Opi told pingo to not see others faults. It was pingo's mistake that he felt bad of Tengo's teasing. Opi's trick was that pingo should be kind with Tengo, even if he got teased by him.
From: Paridnya Rathod
Std: III A Gopalan National school (Banglore)

1 Paridnya Rathod
Banglor

કોઇ આપણી મશ્કરી કરે તો આપણે એને માફ કરી દેવા જોઇએ, અને આપણે કોઇની મશ્કરી ક્યારેય પણ ના કરવી જોઇએ.

2 Bhavya Tank
Dhoraji

Puzzle Answer:

૧) જગત કલ્યાણ ૨) સમજશક્તિ ૩) ઉદ્દેશ ૪) નિરંતર ૫) નિમંત્રણ
૬) નિર્ધન ૭) સિહાંસન ૮) રણસંગ્રામ ૯) શુક્રવાર ૧૦) મંત્ર

ऐतिहासिक गौरवगाथा

कोशल देश के राजा दानेश्वरी के रूप में प्रसिद्ध थे। माता-पिता के पास जैसे बालक दौड़कर जाता है वैसे ही दु:खी लोग उनके पास दौड़कर जाते।

कोशलराज की कीर्ति काशीराज से सहन नहीं हुई। वे ईर्षा से जलने लगे। "मेरी प्रजा में लोग मुझ से ज्यादा कोशलराज को बड़ा मानते हैं?"

एक दिन उन्होंने अपने सेनापति से कहा, "सेनापति, चलो हाथ में तलवार लो, और लश्कर तैयार करो। कोशलराज मुझसे बड़ा बनना चाहता है तो मुझे उसे सबक सीखाना है।"

काशीराज ने सेना तैयार की, और कोशल देश पर चढ़ाई कर दी। कोशलराज रणसंग्राम में हार गए और जंगल में भाग गए। विजयी काशीराज ने राजसभा बुलवाई, और सभी से हँसते-हँसते कहा, जिसमें धन संभालने की शक्ति नहीं

हो उसे दानेश्वरी बनकर नहीं निकलना चाहिए।

लेकिन प्रजा ने अपने नए राजा का स्वीकार नहीं किया। जगह-जगह लोग रो रहे थे। हमारी छत्रछाया चली गई। पूरे जगत् के मित्र कोशलराज के शत्रु पर धिक्कार है।"

नगरवासियों का यह प्रेमभाव देखकर, काशीराज गुस्से से आग बबूला हो गया। उसे लगा, "जब तक कोशलराज ज़िंदा है तब तक सब लोग उसके गुणगान गाना छोड़ेंगे नहीं। इसीलिए उसे मार डालना ही उचित होगा।"

ऐसा सोचकर उसने अपने मंत्री को बुलाकर कहा, "मंत्री जी जाइए, नगर मे ढ़िंढोरा पिटवाइएँ कि जो कोई भी कोशलराज को ज़िंदा या मुर्दा पकड़कर लाएगा उसे हज़ार सोनामहोर इनाम के रूप में दी जाएगी।"

राजा के नौकर जगह-जगह पर घोषणा करने लगे। जो कोई सुनता वो आँख बंद कर लेता, कान को हाथ से बंद कर देता।

फटे हुए वस्त्र में निर्धन कोशलराज एक जंगल में से जा रहा था। वहाँ उसे एक राहगीर मिला। आँसु भरी आँखों से उसने राजा से पूछा, भाई कोशल देश का रास्ता किस ओर आता है। राजा ने उसको पूछा,"उस अभागे देश में क्यों जाना है भैया?"

राहगीर ने कहा, "मैं व्यापारी हूँ।" मेरा जहाज समुद्र में डूब गया। अब भीख माँगकर किस तरह जीयु। मैंने सुना है कि कोशलराज तो अनाथ के नाथ है। उनके द्वार से कोई भी खाली हाथ नहीं लौटा। इसलिए उनके पास जाकर मेरे दुःख दूर करना चाहता हूँ।"

यह सुनकर, कोशलराज ने खुद के आँसू को छिपा दिया। क्षणभर कुछ विचार किया और कहा, "भाई, तुम कई कठिनाईयाँ उठाकर यहाँ आया है। तेरी इच्छा पूरी हो ऐसा रास्ता तुझे बताता हूँ।" ऐसा कहकर वे उसे अपने साथ चलने लगा।

काशीराज दरबार लगा था। वहाँ वनवासी यानी कि कोशलराज आकर खड़े रहे। राजा ने मुस्कुराकर उससे कहा, "किस कारण से आप यहाँ आए है।"

उस वनवासी ने धीरे से कहा, "काशीराज, मैं कोशलराज हूँ। मुझे पकड़कर लाए उससे तुम बड़ा इनाम देने का एलान किया है। तो वह मेरे साथ आए व्यापारी को दो। वह बड़ी मुश्केली में है। मुझ से कुछ मिलेगा, इस आशा से मेरे नगर का रास्ता पूछते जा रहे थे। ऐसे में बीच में मुझ से मिले। मैं उन्हें निराश करना नहीं चाहता। इसलिए लो मेरा यह सिर। और उसके इनाम की रकम उसे दे दो।"

यह सुनते ही व्यापारी चौंक गया उसे सपने में भी पता नहीं था कि जिस इरादे से उसने रास्ता पूछा था वे खुद राजा कोशलराज थे। पूरा दरबार स्तब्ध हो गया। कई लोगों की आँखों से आँसू छलकने लगे।

पलभर तो काशीराज भी चूप हो गए। फिर अपने सिंहासन पर से उठकर कोशलराज के पास गए। और दोनों हाथ जोड़कर कहा, हे कोशलराज आप पर विजय प्राप्त करने के मेरे सारे प्रयास निष्फल गए। आज आपने मुझ पर संपूर्ण विजय प्राप्त कर लिया। मैं आज आपको आपका राज्य और साथ में मेरा दिल भी वापस देता हूँ। अब आप सिंहासन पर बैठकर, अपने ही राज्यभंडार में से इस वणिक को जितना चाहिए उतना धन दीजिए।"

ऐसा कहकर, काशीराज ने वनवासी को राज सिंहासन पर बिठाया और राजमुकुट पहनाया। नगरजनों ने एक आवाज़ से नारा लगाया, "धन्य है कोशलराज को! धन्य है काशीराज को!"

Akram Express
October 2019
Year : 7, Issue : 7
Conti. Issue No.: 80

BALVIGNAN
Fun 'n' Gnan with Dada

Date of Publication On 8th Of Every Month
RNI No.GUJHIN/2013/53111
Postal Reg. No. G- GNR-306/17-19
valid up To 31-12-2019
LPWP Licence No. PMG/HQ/081\2018
valid up to 31-12-2019
Posted at Adalaj Post Office
on 08th of every month

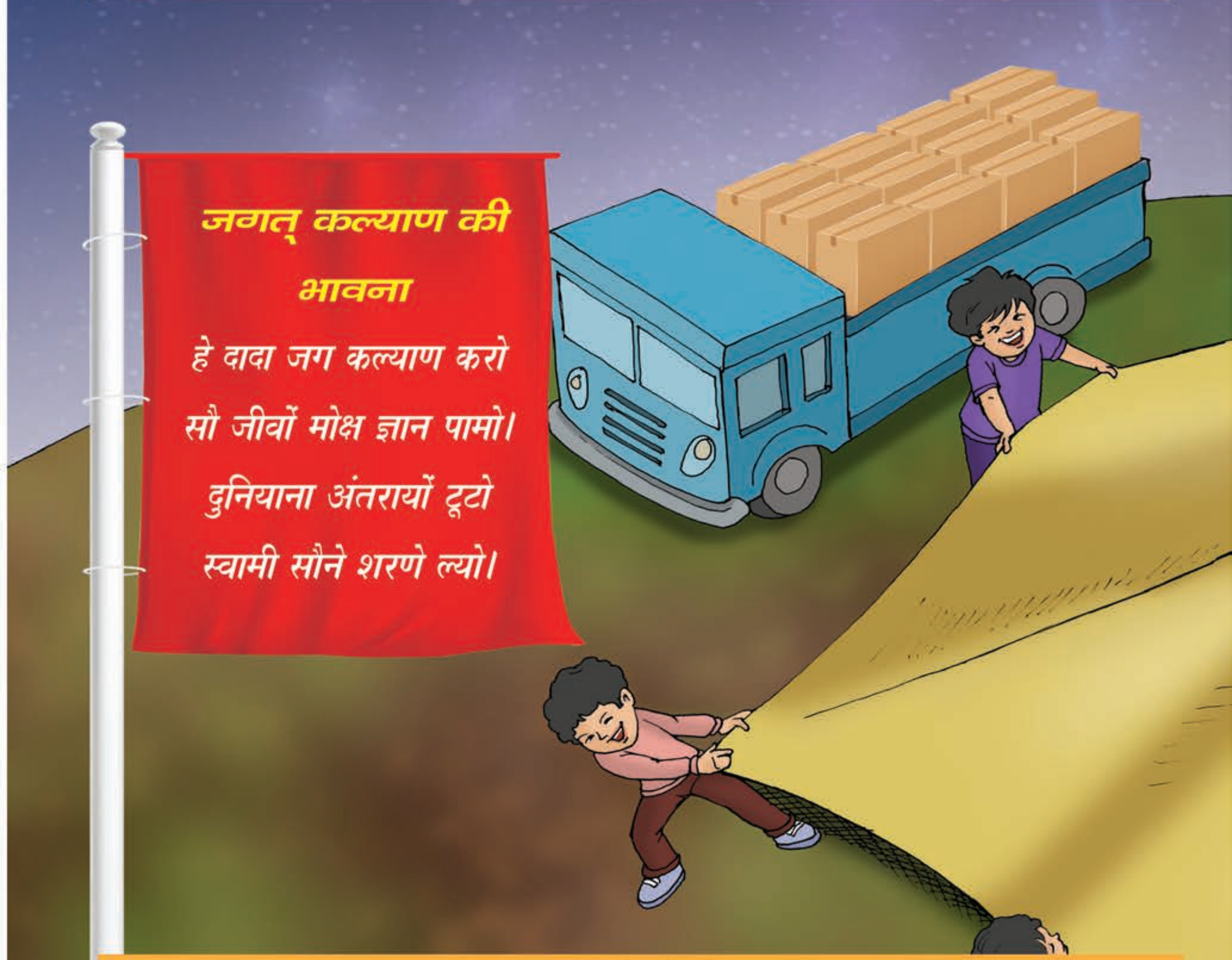

अक्रम एक्सप्रेस के सदस्यों के लिए सूचना

१. आपकी वार्षिक सदस्यता समाप्त हो रही है उसका पता कैसे चलेगा? यदि आपकी इस महीने में आई हुई अक्रम एक्सप्रेस के कवर के लेबल पर लगे हुए मेम्बरशीप नं. के बाद **#** हो तो यह आपकी अंतिम अक्रम एक्सप्रेस है। उदा. **AGIA4313#** और यदि लेबल पर मेम्बरशीप नं. के बाद मम हो तो अगले महीने में आपकी सदस्यता समाप्त होगी। उदा. **AGIA4313##** अक्रम एक्सप्रेस रिन्यूअल की जानकारी संपादकीय पेज पर दी गई है।

२. यदि किसी महीने का अक्रम एक्सप्रेस आपको नहीं मिला हो तो नीचे दी गई माहिती फोन नं. ८१५५००७५०० पर स्रूरू करें।

१. कच्ची पावती नंबर या **ID No.,** २.पूरा ऐड्रेस पिन कोड के साथ, ३. जिस महीने का मैगेज़ीन नहीं मिला हो, उस महीने का नाम।

Publisher, Printer & Editor - Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation
Printed at Amba offset :- B-99 GIDC, Sector - 25, Gandhinagar - 382025